L.N. Mithila University
Darbhanga (Bihar)
Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assistant Professor,
Guest Teacher,
V.S.J. College, Rajnagar,
Madhubani (Bihar)
pramodkumarsahu2018@gmail.com

BA. Part - III
Paper - III
Psychology (Honours)
Topic - Criticisms of Watson's Behaviourism.

आलोचकों ने व्यवहारवाद के प्रारम्भिक सम्प्रदाय तथा द्वितीयक सम्प्रदाय दोनों की आलोचना कई मुद्दों पर किया है। आलोचना के प्रमुख बिन्दु निम्नलिखित हैं।

(1) वाटसन के मनोविज्ञान के सबसे बड़े आलोचक विलियम मैकडुगल थे, जैसे कि हम जानते हैं मैकडुगल तथा वाटसन मूलप्रवृत्ति के सिद्धान्त को पूर्णतः अस्वीकृत कर चुके थे, और यह सिद्धान्त सम्पूर्ण मैकडुगल के मनोविज्ञान का मुख्य आधार था, वाटसन पर तीखा प्रहार करते हुए मैकडुगल ने यह स्पष्ट किया कि चेतन तथा मन के अस्तित्व को नकार करके तथा अन्तर्निरीक्षण विधि को पूर्णतः अस्वीकृत करके वाटसन ने मनोविज्ञान के क्षेत्र को संकुचित कर दिया है। तथा साथ - ही साथ कई महत्वपूर्ण घटनाओं को मनोविज्ञान के क्षेत्र से बाहर कर दिया है। जैसे - जब चेतन के अस्तित्व को नकार दिया जाता है। तो चेतन अनुभूति के प्रकार्यात्मक सम्बन्ध चेतन अनुभूति का शारीरिक क्रियाओं पर निर्भरता को ठीक ढंग से अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

R.S. Woodworth जिन्हें वाटसन के मनोविज्ञान से प्रारंभ से ही कुछ लगाव सा था, वे भी वाटसन की आलोचना करने में पीछे नहीं रहे। वुडवर्थ का मत था कि वाटसन ने चेतन के अस्तित्व को नकारने में तथा वस्तुनिष्ठ व्यवहार के अध्ययन में निरन्तर से ज्यादा बल डालने और देख - भाल से संवेदन तथा प्रत्यक्षण में कोई कमी काफी बाधित हो सकते हैं।

वे वाटसन की आलोचना इसलिए भी करते हैं कि वे अन्तर्निरीक्षण के जगह पर शाब्दिक रिपोर्ट की विधि का उपयोग करते थे। जो वास्तव में एक तरह का अन्तर्निरीक्षण विधि ही थी। (वुडवर्थ - 1948) ने इस बिन्दु पर टिप्पणी करते हुए कहा है। इसलिए इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि शाब्दिक रिपोर्ट एक व्यवहारवादक विधि नहीं तथा वाटसन द्वारा इस विधि का उपयोग करना प्रणाली-विधि व्यवहारवाद की हार को स्वीकार करता है। (Boring 1950) ने भी शाब्दिक रिपोर्ट के इस विधि की कड़ी रूप से आलोचना किया है।

(ii) वाटसन की आलोचना इस बिन्दु पर भी की गयी है कि उन्होंने कुछ मानसिक संप्रत्ययों जैसे - संवेग - अर्थ, चिन्तन आदि को व्यवहारवादी भाषा में परिभाषित करने की कोशिश किया है। लेकिन - मानसिक संप्रत्ययों का व्यवहारवाद की वस्तुनिष्ठता पर चिह्न लगा - कर कमजोर पड़ने लगता है। इस आलोचना पर अपनी बात व्यक्त करते हुए, (Heidbreder) 1961 ने कहा है कि मानसिक संप्रत्ययों को ऐसा शाब्दिक अनुवाद जो इन संप्रत्ययों की वस्तुनिष्ठता होने का आभास उत्पन्न करता है परन्तु वास्तव में इन्हें व्यवहारवादक भाषा में मात्र अनुवाद करके छोड़ दिया गया है।

(iii) वाटसन की आलोचना इस बिन्दु पर भी की गयी है कि उन्होंने विभिन्न व्यवहारों की व्याख्या में आन्तरिक व्यवहार प्रवृत्तियों का उपयोग किया है जिसका प्रेक्षण सीधे नहीं किया जा सकता है। इस तरह से आलोचना ने वाटसन पर एक परस्पर विरोधाभासी प्रस्तुत करने का आरोप लगाया है। जहाँ एक ओर तो वे वस्तुनिष्ठ रूप से प्रेक्षित व्यवहार के अध्ययन पर बल डालते हैं। तो दूसरी ओर आन्तरिक व्यवहार प्रवृत्तियों के अध्ययन पर जिसे प्रत्यक्ष रूप से देखा नहीं जा सकता है। उदाहरण स्वरूप:-

Scanned with CamScanner

III

आन्तरिक संभावना है कि व्यवहार में वे आन्तरिक अनुक्रियाओं जैसे - सोच, भूख, एवं स्वप्नों की गतियों पर आधारित बात करते हैं। जिनका प्रेक्षण किया जा सकता है। इस तरह से वाटसन स्वयं ही मनोविज्ञान पर लगाए गए उन प्रतिबन्धों को हटा रहे थे, जिसे उन्होंने स्थापित कर रखा था।

(iii) कुछ मनोवैज्ञानिकों जैसे - टॉलमैन, (Tolman 1932) ने वाटसन के मनोविज्ञान की आलोचना करते हुए कहा है कि वाटसन ने अपने मनोविज्ञान में उद्देश्य से व्यवहार की व्याख्या से पृथक रख दिया है। या इस वैज्ञानिक व्याख्या के लिए एक आवश्यक संप्रत्यय बतलाया है। टॉलमैन ने यह कहा है कि वाटसन ने व्यवहारों की व्याख्या उनके दैहिक स्वरूपों के रूप में एक आणविक स्तर में की है। टॉलमैन ने इस तरह की आणविक व्याख्या को अस्वीकृत कर दिया है। और उसकी जगह पर व्यापक व्याख्या प्रदान किया है जिसमें उद्देश्यपूर्णता पर बल डाला गया है। जिसके बिना किसी भी संप्रत्यय या व्यवहार की व्याख्या वैज्ञानिक ढंग से नहीं की जा सकती है। बाद में स्वयं वाटसन टॉलमैन के इस प्रभाव को स्वीकार कर लिया कि व्यवहार की व्याख्या व्यापक व्यवहारात्मक पदों के रूप में किया जा सकता है क्योंकि यह एक तरह की महत्वपूर्ण घटना है जिसके कुछ विशेष परिभाषित विशेषताएँ होती हैं। वाटसन ने सैद्धान्तिक रूप से यह भी स्वीकार किया कि व्यापक व्यवहार को उसके दैहिक स्तरों के रूप में विश्लेषित किया जा सकता है।

(iv) प्रारंभिक व्यवहारवाद के बारे में वाटसन द्वारा किये गये दावों की काफी आलोचना की गयी है। आलोचकों का कहना है कि वाटसन ने अन्तर्निरीक्षण को अस्वीकृत किया परन्तु मौखिक रिपोर्ट की विधि को स्वीकृत किया। इससे एक विरोध का भाव उत्पन्न होता है। इसलिए एक विरोध का भाव उत्पन्न होता है और इसके लिए वाटसन की आलोचना इस तरह की गयी है। इससे - का पता चलता ...

(V)

वाटसन के अनौपचारिक व्यवहारवाद पर कई आपत्ति किया गया है - मन (माइन्ड) के अस्तित्व को अस्वीकृत कर दिया है, तथा अन्तःनिरीक्षण विधि के विरोध में क्रमबद्ध तर्क उपस्थित किये थे, वाटसन के इस दावों को हंटर (Hunter) जैसे व्यवहारवादी तथा ऐसे ही व्यक्ति जैसे अव्यवहारवादियों द्वारा समान रूप से आलोचना की गयी, हंटर का कहना था कि चेतना या मन अस्तित्व को अस्वीकृत कर देते हैं तो वे कुछ संप्रत्यय जैसे चिन्तन तथा संवेदना आदि की व्याख्या करने में सफल नहीं हो पायेंगे।

(VI) आलोचकों का कहना है कि वाटसन ने पर्यावरणवादी दावों को जितना जरूरी उससे ज्यादा महत्व दिया है, आनुवंशिक तथा जन्मजात कारकों की पूर्णतः उपेक्षा किये हैं। जबकि यह स्पष्ट किया कि व्यक्ति के व्यवहारों में जो अन्तर होता है उसका मूल कारण पर्यावरणीय कारक होता है। आधुनिक मनोवैज्ञानिकों ने वाटसन के इस दावों को एक तरफा बताने के साथ साथ इसे अवैज्ञानिक भी कहा है। आधुनिक समय में व्यवहार आनुवंशिकी तथा जनन विज्ञान में खोजों की फलस्वरूप अधिक हो जाने से प्राणियों के व्यवहारों में होने वाले अन्तरों की व्याख्या आनुवंशिक एवं जन्मजात कारकों के रूप में कर जाने प्रवृत्ति अधिक देखने को मिलती है।

Dr. Praveen Kumar Sahu
Date - 26/05/2020
Sub - Psychology

Scanned with CamScanner